FROM- Dr Arun Kumar
Reader
Deptt of Sociology
Sherghati College Sasaram

स्नातक समाजशास्त्र(H) Paper - VI (1)
(प्रतिष्ठा)

ग्रामीण तथा नगरीय समुदाय - गाँव तथा नगर पूर्णतया एक दूसरे से भिन्न हैं ऐसा सोचना उचित नहीं है। क्यों कि इनमे कुछ अंशो मे ही अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक नगर मे ग्रामीण विशेषताएं पायी जाती हैं. और प्रत्येक गाँव मे नगरीय विशेषताओं को देखा जा सकता है। प्रत्येक नगर जहाँ समाप्त होता है उस भाग पर नगरीय जीवन विशेषताओं को देखा जा सकता है। ~~प्रत्येक नगर~~ उसी स्थान पर ग्रामीण जीवन की भी विशेषताएं देखी जा सकती हैं। दोनो समाजो को पूर्णतया एक दूसरे से अलग करना अत्यन्त कठिन है, इनमे कुछ अंशो का अन्तर है।

इस प्रकार ग्रामीण तथा नगरीय समाजो या समुदायो के विशेषताओं मे जहाँ अन्तर पाया जाता है वही इनकी कुछ विशेषताओं मे समानता भी दिखाई देती है फिर भी ग्रामीण तथा नगरीय समुदायो मे अनेक प्रकार के अन्तर भिन्न-भिन्न स्तरो पर दिखाई देते हैं -

• सामाजिक संगठन (Social organization)

(1) परिवार - गाँवो मे संयुक्त परिवार और बड़े परिवार की परम्परा है जबकि नगरो मे छोटे और एकाकी परिवार का चलन है। संयुक्त परिवार मे कठोर अनुशासन होता है और इनके सदस्यो मे सामूहिक भावना होती है जबकि नगरीय परिवार व्यक्तिवादी और स्वार्थी होते हैं और इनके सदस्यो मे अनुशासन नाममात्र का होता है।

(2) स्त्रियो की स्थिति - ग्रामीण परिवार मे स्त्री की स्थिति दयनीय है। वह आर्थिक रूप से न स्वावलम्बी होती है और न शिक्षित ही है इसके विपरीत नगरीय स्त्री शिक्षित चतुर और स्वावलम्बी बनने का प्रयास करती है। वह अपने विचारो मे काफी सीमा तक स्वतंत्र है। वह पुरुष की सहयोगिनी और मित्र भी है।

(3) विवाह - ग्रामीण समाज मे विवाह का स्वरूप और पद्धति - परम्परात्मक और जातिगत है। जबकि नगर मे विवाह का प्रतिमान और संस्कार दोनो मे गम्भीर परिवर्तन हुए हैं। प्रेम विवाह और अन्तर्जातीय विवाह की दर मे निरन्तर वृद्धि हो रही है। नगरो मे लड़को और लड़कियो की वैयक्तिक पसन्दगी को काफी महत्व दिया जाता है और वे किस प्रकार के लड़के और लड़की को अपना जीवन साथी बनाना चाहते हैं। इस प्रकार की स्वतंत्रता ग्रामीण परिवार के लड़के और लड़कियों को प्राप्त नहीं है।

(4) पड़ोसियो से सम्बन्ध - ग्रामीण समाज मे पड़ोसियो से सम्बन्ध काफी अच्छे सुदृढ़ और आत्मीय होते हैं।

इसके इनमें सामूहिकता की भावना होती है। एक दूसरे के दुख-सुख के सहभागी होते हैं। ~~इनमें सामूहिकता की भावना होती है। एक दूसरे के~~ इसके विपरीत नगरीय पड़ोसियों में औपचारिक-सम्बन्धों के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। महानगरों में पड़ोसी यह भी नहीं जानता कि उसके पड़ोस में कौन रहता है और क्या करता है इसके व्यवसाय भिन्न भिन्न हैं। यहाँ पड़ोसियों में विश्वास अधिक और मेलजोल की भावना कम होती है। यह पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता के प्रभाव का परिणाम है।

(5) सामुदायिक भावना — ग्रामीण समाज में सामुदायिक भावना अत्यधिक होती है। हम की भावना उन्हें एक दूसरे से कसी हुई रूप से जोड़े रहती है। इसके विपरीत नगरीय समुदाय में न हम की भावना पायी जाती है और न व्यक्ति अपने को किसी समुदाय से घनिष्ठ रूप से जोड़ता है। सामुदायिक भावना नगर में ना के समान होती है।

- सांस्कृतिक जीवन (Cultural life) नगर और गाँव की संस्कृतियों और सांस्कृतिक जीवन में भिन्न अन्तर है।

(1) संस्कृति की प्रकृति — ग्रामीण संस्कृति, अभौतिक संस्कृति की विशेषताओं से गुथी हुई है। ग्रामीण व्यक्ति अपनी परम्पराओं रीति-रिवाजों रूढ़ियों और धर्म से इतना बंधा है कि उसे किसी कीमत पर त्यागना नहीं चाहता है। इसलिए इसकी प्रकृति बहुत कुछ स्थायी है। नगरी संस्कृति में शताब्दियों से परिवर्तन होते रहे हैं, पर ग्रामीण समाज की संस्कृति अभी भी बहुत कुछ वैसी ही बनी हुई है।

- आर्थिक जीवन (Economic life)

(1) व्यवसाय और जीविका के साधन में विविधताएँ — नगर और गाँव के व्यवसायों का प्रतिमान एक दूसरे से पूर्णतया भिन्न है। यह एक ऐसा आधार है जो गाँव और नगर को एक-दूसरे से स्पष्ट रूप से अलग-अलग है। ग्रामीण समाज का मुख्य व्यवसाय कृषि है जो पूर्णतया प्रकृति पर आधारित है। इसके विपरीत नगर में मनुष्य ने अपने ज्ञान विज्ञान के अविष्कारों से असंख्य प्रकार की मशीनों को जन्म दिया है। यहाँ फैक्टरी-मिल कारखाने अनेक छोटे बड़े उद्योग धन्धे का जाल बिछा होता है। इसलिए नगर व्यवसाय के केन्द्र स्थल है। नगरीय जीवन में धन ही सब कुछ है समस्त प्रकार के सम्बन्धों का केन्द्र बिन्दु धन है। दूसरे व्यक्तियों से सम्बन्ध स्थापित करते समय द्रव्य पर आधारित दृष्टिकोण होता है।

(2) श्रम विभाजन और विशेषीकरण :- ग्रामीण समाज में श्रम विभाजन और विशेषीकरण का आधार जातिगत और परम्परागत है।

इसके विपरीत नगर मे श्रम विभाजन और विशेषीकरण का आधार - जाति न होकर शिक्षा, विशेष कार्य मे प्रशिक्षण आति है यहां हरिजन भी डाक्टर बन सकता है और प्रशासक भी, और सवर्ण चपरासी भी हो सकता है और एक सामान्य श्रमिक भी।

(3) रहन सहन का स्तर - ग्रामीण समाज मे अर्थोपार्जन के साधन सीमित है बल्कि मुख्य रूप से कृषि व्यवसाय है। प्रकृति पर आधारित व्यवसाय। वर्षा ठीक हुई तो फसल ठीक होगी - अन्यथा दरिद्रता ग्रामीणो को घेरे रहती है। नगर उद्योगो के क्षेत्र है यहां व्यक्ति प्रातः से सायं तक धन कमाने के चक्कर मे मशीन की तरह कार्य करता है। यहां व्यक्ति अपने परिश्रम से अपनी आर्थिक स्थिति को ऊंचा करता है। उसे धनी बनने के अनेक अवसर प्राप्त है। इसलिए नगरीय व्यक्तियो का रहन-सहन का स्तर ग्रामीण की अपेक्षा कही ऊंचा और अच्छा होता है।

- सामाजिक संबंध (Social Relationship)

(1) वैयक्तिक सम्बन्ध — ग्रामीण समाज मे विविधताएं न के समान है। कृषि व्यवसाय और इससे जुड़े हुए कुटीर उद्योग धन्धे ही वहां के मुख्य व्यवसाय है गाँव की जनसंख्या कम होने के कारण और व्यवसाय मे विविधता न होने के कारण सभी व्यक्ति एक दूसरे से परिचित होते है। इसके विपरीत नगर और महानगरो मे लाखो और करोड़ो की आबादी होती है। यहां व्यक्ति एक दूसरे से जीवन भर अपरिचित रहता है। महानगरो मे रहने वाला व्यक्ति अपने पड़ोसी से भी परिचित नही होता।

(2) सम्बन्धो मे व्यावसायिक भावना — नगर का वातावरण व्यक्ति को स्वार्थी महत्वकांक्षी, धूर्त, चालाक और भ्रष्टाचारी बनाता है। इसके विपरीत ग्रामीण समाज मे धन के आधार पर सम्बन्ध स्थापित नही होते वहां परम्परात्मक और जातिगत सम्बन्धो का आधार है। जजमानी प्रथा इसका उदाहरण है।

(3) सामाजिक समूह - ग्रामीण समाज मे प्राथमिक सामाजिक समूहो का महत्व है परिवार और पड़ोस उनके जीवन की अधिकांश आवश्यकताओ की पूर्ति करते है। ग्रामीण व्यक्ति अधिकांश समय परिवार और पड़ोस मे व्यतीत करते है नगर मे द्वितीयक समूहो का महत्व है वह अनेक समितियो संगठन और संस्थाओ का सदस्य होता है इनके माध्यम से वह अपनी असीमित आवश्यकताओ और महत्वकांक्षाओ को पूर्ण करने का प्रयास करता है।

- सामाजिक अन्तःसम्बन्धीकार्य (Social interaction)

(1) सामाजिक सम्पर्क - ग्रामीण समाज छोटे छोटे सीमित क्षेत्रो मे विभाजित है। इसलिए वहां सामाजिक सम्पर्कों और सम्बन्धो की सीमाएं भी संकुचित है।

इसके विपरीत नगरीय व्यक्ति का सामाजिक सम्पर्कों का दायरा असीमित है हमारे व्यक्तियों से उसका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क होता है। आवागमन एवम् संचार के साधन उसके सामाजिक सम्पर्क को असीमित बनाते हैं। रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, समाचार पत्र पत्रिकाएँ उसे अप्रत्यक्ष रूप से विश्व से जोड़ती हैं। इसलिए नगर का व्यक्ति प्रगतिशील जागरूक नागरिक होता है।

(2) सहयोग की भावना – ग्रामीण समाज मे सहयोग की भावना अत्यधिक होती है इसका मुख्य कारण छोटा और संगठित समाज है। परन्तु सहयोग भावना परिवार एवम् पड़ोस तक सीमित होकर रह जाती है। इसके विपरीत विशाल नगर मे प्रत्येक व्यक्ति अपने-2 कार्य की अनुशासन-वद्ध, एवम् समयानुसार करता है। नगरो मे सहयोग की भावना श्रम विभाजन और विशेषीकरण की प्रक्रिया मे देखी-जा सकती है। सम्पूर्ण नगरीय जीवन परस्पर सहयोग की भावना पर आधारित है। इसलिए असंख्य प्रकार के कार्य परस्पर सहयोग के आधार पर चलते हैं।

(3) प्रतिस्पर्धा और संघर्ष – नगर और गाँव मे प्रतिस्पर्धा एवम् संघर्ष के स्वरूपो मे पर्याप्त अन्तर है ग्रामीण समाज मे प्रतिस्पर्धा न के बराबर है। वैसे नगरीय जीवन मे पग पग पर प्रतिस्पार्धा के दर्शन होते हैं। लेकिन ग्रामीण मे जातिगत लड़ाई झगड़े खेतो के झगड़े सवर्ण और हरिजनो के मध्य तनाव भूमि के झगड़ो को लेकर परस्पर संघर्ष अप्रत्यक्ष रूप मे अधिक होता है। जो गुलूस तोड़ फोड़ हड़ताल, तालाबन्दी मारपीट आदि रूप मे प्रस्फुटित होता है।

(4) व्यवस्थापन और एकीकरण की प्रक्रिया – ग्रामीण समाज मे व्यवस्थापन की प्रक्रिया सहज नही है, सामाजिक परिवर्तनो को सहज ही यह स्वीकार नही करता है। नगरीय जीवन मे सहिष्णुता की भावना अत्यधिक होती है इसलिए वे अपने को समय एवम् परिस्थिति के अनुकूल सहज ही ढाल लेते हैं।

- सामाजिक दृष्टिकोण –

(1) ग्रामीण समाज रूढ़िवादी परम्परावादी और अन्धविश्वासी है – नगर परिवर्तन का केन्द्र है यहाँ नित्य परिवर्तन होते रहते हैं।

(2) सामाजिक सहिष्णुता – ग्रामीण अपनी संस्कृति के घेरे मे कैद रहता है। इसके विपरीत नगर मे अधिक सहिष्णुता होती है नगर मे बहुत सी चीजो के साथ समझौता करके ही व्यक्ति रह सकता है।

(3) धर्म और आचार – ग्रामीण अपने धर्म और आचार को अत्यधिक महत्व देता है नगर का व्यक्ति आज धर्म और आचार को नही मानता।

(4) भाग्यवादिता – प्रकृति ने ग्रामीणो को भाग्यवादी बनाया है। कृषि व्यवसाय प्रकृति पर निर्भर है। नगर कृषि पर आधारित न होकर उद्योगो पर आधारित है।

कृषि व्यवसाय - ग्रामीण व्यक्ति सीधा, सरल और निश्छल होता है उनमे धूर्तता और स्वार्थ नाम मात्र का होता है।

नगर की सभ्यता और संस्कृति कृत्रिमता पर आधारित है। यहाँ सबकुछ व्यक्ति का निर्माण किया है। हैलो " से व्यक्ति का स्वागत होता है।

- सामाजिक नियन्त्रण (Social control) दोनो ही समाजो मे सामाजिक नियन्त्रण के साधन भिन्न भिन्न है। ग्रामीण समाज मे व्यक्ति अपनी परम्पराए, रूढ़ियाँ धर्म और आचार की उपेक्षा नही करता और न उसका उल्लंघन करता है। नगर विभिन्न संस्कृतियों जातियो धर्मों सम्प्रदायो और वर्गों का पुंज है। लाखों व्यक्ति एक दूसरे से अनजान है। उनके कार्य, विचार आदर्श, मूल्य मान्यताएँ सभी एक दूसरे से भिन्न है।
- सामाजिक गतिशीलता - ग्रामीण समाज के व्यक्ति का अपनी भूमि से अटूट लगाव है नगर का व्यक्ति अपनी आर्थिक सामाजिक स्थिति को बेहतर और सुदृढ़ बनाने दृष्टि से निरन्तर एक नगर से दूसरे नगर मे जीविका खोज मे जाता रहता है।
- सामाजिक स्थायित्व - ग्रामीण संस्कृति मे विविधता के स्थान पर एकरूपता अधिक है। व्यवसाय मे विभिन्नताएँ नही है, लेकिन नगर विविधता का केन्द्र है
- राजनीतिक प्रतिमान - नगर की तरह ग्रामीण जनमानस मे राजनीतिक जागरूकता आज भी उत्पन्न नही हुई ग्रामीण अपनी रोजी रोटी के चक्कर मे लगातार व्यस्त रहता है। इसके विपरीत नगर राजनैतिक जागरूकता और गतिविधियो का केन्द्र स्थल है।
- पारिस्थितिकी विशेषताएँ (Ecological Features)

ग्रामीण जीवन का पर्यावरण प्राकृतिक विशेषताओ से घिरा है कृषि, भूमि, बाग, तालाब, नदी, नाले, सभी प्रकृति पर निर्भर है।

नगरीय पर्यावरण फैक्टरी मिल, कारखाने और विभिन्न प्रकार के उद्योगो का घनत्व अधिक होता है।

- जनसंख्या की सघनता - ग्रामीण समाज मे जनसंख्या कम होती है। नगर मे लाखो और करोड़ो की आबादी होती है।
- सामाजिक आर्थिक समस्याएँ - नगर और गाँव की आर्थिक सामाजिक समस्याओ मे भी अन्तर है। ग्रामीण समाज की मुख्य समस्याएँ अशिक्षा निर्धनता, बेकारी स्वास्थ्य और जातिवाद है। जबकि नगर मे मुख्य समस्या बेकारी, शिक्षित-अशिक्षित बेकारी कुशल और अकुशल श्रमिको की बेकारी है।
- सामाजिक विघटन - Social Disorganization) ग्रामीण एवम् नगरीय समाज मे सामाजिक विघटन की प्रकृति मे अन्तर है। ग्रामीण समाज स्थिर और रूढ़िवादी है नगर सामाजिक विघटन के केन्द्र बन गए है व्यक्तिवादी दृष्टिकोण ने व्यक्ति को स्वार्थी, अवसरवादी और महत्वाकांक्षी बनाया है।

Scanned by TapScanner

संक्षेप मे ग्रामीण तथा नगरीय समुदायो मे पाए जाने वाले अन्तर :-

तालिका -

आधार	ग्रामीण समुदाय	नगरीय समुदाय
(1) व्यवसाय	(1) ग्रामीण समुदायो मे कृषि तथा कृषि से सम्बन्धित कार्य।	(1) नगरो मे सभी व्यक्ति विशेषकर वस्तुओ का निर्माण यान्त्रिक कार्य व्यापार, उद्योग, व्यवसाय,
(2) परिवेश	(2) ग्रामीण परिवेश पर प्रकृति की प्रबलता होती है। लोगो का प्रकृति से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है।	(2) प्रकृति से अधिक दूरी तथा प्राकृतिक परिवेश पर मनुष्य द्वारा बनाए हुए परिवेश की प्रबलता।
(3) समुदायो का आकार	(3) गाँवो मे छोटे समुदाय होते है।	(3) नगरीय समुदाय का आकार निश्चित रूप से बड़ा होता है।
(4) जनसंख्या का घनत्व	(4) नगरीय समुदाय की अपेक्षा जनसंख्या का घनत्व कम होता है।	(4) ग्रामीण समुदाय की तुलना मे घनत्व काफी अधिक होता है।
(5) जनसंख्या की सजातीयता और विजातीयता	(5) ग्रामीण समुदाय मे प्रजातीयता और मानसिक लक्षणो मे अधिक सजातीयता होती है।	(5) ग्रामीण समुदायो की तुलना मे घनत्व काफी अधिक होता है।
(6) सामाजिक विभेदीकरण और स्तरीकरण	(6) ग्रामीण विभेदीकरण और स्तरीकरण नगरो की अपेक्षा कम है।	(6) विभेदीकरण और स्तरीकरण का नागरीयता से सकारात्मक पारस्परिक सम्बन्ध प्रतीत होता है।
(7) गतिशीलता	(7) जनसंख्या की प्रादेशिक व्यवसायात्मक और दूसरे प्रकार की गतिशीलता तुलनात्मक दृष्टि से कम गहन होती है।	(7) नगरीयता और गतिशीलता आपस मे सकारात्मक सम्बन्ध है।
(8) सामाजिक अन्तः क्रिया की पद्धति	(8) ग्रामीण परिवार के सदस्यो और पूरे समाज के लिए अन्तः क्रिया पद्धति का सकुचित क्षेत्र।	(8) अधिक संख्या मे सम्पर्क

From - Dr. Arun Kumar
Reader.
Deptt of Sociology.
Shershah College
Mob - Sasaram -